ISSN : 2583-2948

दीपक शर्मा 'सार्थक'
सहायक अध्यापक
सीतापुर, उत्तर प्रदेश
मो. नंबर - 6394521525

गज़ल

थोड़ा फ़रेब खुद से ही करने के बदौलत
एहसास-ए-ज़िन्दगी कि ज़मीं बरक़रार है !

उकता गया हूँ अब तो मोहोब्बत से इस क़दर
दिल को सुकून का ही फ़कत इन्तज़ार है !

कुदरत बदल गई है खुदा भी बदल गया
खुदपे ही अब कहाँ मुझे भी ऐतबार है !

जो प्यार का व्यापार करें उनको ढूँढिये
मेरा तो सिर्फ दर्द का ही कारोबार है !

जो हो रहा, हो जाए ,अब हमें फ़िकर नहीं
हर चीज़ थामने का कहाँ इख्तियार है !

सारा जहान् खुद को बेक़सूर है कहता
उसकी नज़र में गैर ही क़ुसूरवार है !

सुख-दुःख में जो शरीक़ था गर्दिश के दौर में
शोहोरत मिली नहीं की वो ही दरकिनार है !

दुनियाँ उलझ के रह गई मज़हब के खेल में
लेकिन खुदा तो प्यार का ही तलबगार है !

ISSN : 2583-2948

(2)

थामे कोई बुनियाद को कितने भी जतन से
गिरती ही जा रही है ये अवैध खनन से !

वो लूटते ही जा रहे हम लुट रहे बेबस
है वास्ता किसे मेरे अधिकार हनन से !

रस्ता बसन्त देख के वापस चला गया
पतझड़ नहीं राज़ी हुआ जाने को चमन से !

वो खून का प्यासा बिछाए जा रहा लाशें
हम रस्ता ढूँढे कोई मिल जाए अमन से!

खैरात का खा के यहाँ बुज़दिल हुई अवाम
उम्मीद क्या करें कोई अब अहले वतन से !

कहने को हैं ज़िन्दा मगर ये कब के मर चुके
किस काम की दुनियां है इसे ढक दे कफन से !

बासी परंपराओ की ढकोसले बाजी
कुछ भी नया बचा नहीं करने को लगन से !

थोड़ा सा फासला नहीं ख़तम हुआ ताउम्र
ना हम बढ़े आगे न ही चला गया उनसे !

ISSN : 2583-2948

(3)

मिट्टी के घर को छोड़ के दौलत की चाह में
बेजान पत्थरों का इक मकान बन गया !

दामन ज़रासा क्या फटा आलम तो देखिए
अपनो की महेफिलों में भी अंजान बन गया !

कर्जे की बली चढ़ गया ऐसा किसान हूँ
उतरे न जो कभी भी वो लगान बन गया !

हीरा तलाशने में कुछ यूँ हुए घायल
वीरान कोयले सी कोई खान बन गया !

ऐसे तो शराफत के मुखौटे से हूँ ढ़का
मौका ज़रा मिला नही शैतान बन गया !

दिल की कभी दिमाग़ की बातों में आके मैं
तलवार दो सम्भालती मियान बन गया !

बातों के तीर मार के घायल किया सबको
बनने चला था ढाल,पर कमान बन गया !

मेरी समझ से है परे इस देश का विधान
हमने चुना था नेता वो भगवान बन गया !

ISSN : 2583-2948

(4)

दरख़्तों को है जो काटे
उसे मालूम भी है क्या ?
किसी ने प्यार से उसको
कभी सींचा सवांरा है !

ज़माने भर की दौलत से
नहीं मिटती हवस अक्सर
कोई दो जून की रोटी
में कर लेता गुज़ारा है !

बड़ी ही बेतुकी होती हैं
मौतें देश में मेरे
किसी को बाढ़ ले डूबी
कोई सूखे का मारा है !

किसी का घर जले तो
हाथ सेंके मतलबी दुनियां
दुआ मागें अगर कोई
कहीं टूटा सितारा है !

हक़ीकत से हैं बेपरवाह
झुकी गर्दन मोबाइल में
जिधर भी देखिए हर ओर
बस ये ही नज़ारा है !

धर्म का नाम ले करके
सियासत जब लगे होने
जलेगा मुल्क फिर एक दिन
कहाँ बचने का चारा है !